AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

भारत और बिम्सटेक संगठन का आपसी संबंध

ORIGINAL ARTICLE

Author
कमलेश कुमारी
राजनीति शास्त्र विभाग
इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय
मीरपुर, रेवाडी, हरियाणा, भारत

शोध सार

बहु क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक) सात दक्षिण एशियाई और दक्षिण पूर्व एशियाई देशों का एक अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जिसमें 1.73 अरब लोग रहते हैं और इसका संयुक्त सकल घरेलू उत्पाद 5.2 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर (2023) है। बिम्सटेक सदस्य देश – बांग्लादेश, भूटान, भारत, म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका और थाईलैंड बंगाल की खाड़ी पर निर्भर देशों में से हैं। सहयोग के चौदह प्राथमिकता वाले क्षेत्रों की पहचान की गई है और उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कई बिम्सटेक केंद्र स्थापित किए गए हैं। बिम्सटेक मुक्त व्यापार समझौते पर बातचीत चल रही है जिसे सार्क के समान भी कहा जाता है। नेतृत्व को देश के नामों के वर्णानुक्रम में घुमाया जाता है। स्थायी सचिवालय ढाका, बांग्लादेश में है (भास्कर, एस जी, 2017)।

मुख्य शब्द

विदेश नीति, बिम्सटेक, सार्क, संगठन.

परिचय

बहु–क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक) एक क्षेत्रीय बहुपक्षीय संगठन है। इसके सदस्य बंगाल की खाड़ी के तटवर्ती और निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित हैं जो एक सन्निहित क्षेत्रीय एकता का निर्माण करते हैं। इसके 7 सदस्यों में से, पांच दक्षिण एशिया से हैं– बांग्लादेश, भूटान, भारत, नेपाल, श्रीलंका और दो दक्षिण पूर्व एशिया से हैं– म्यांमार, थाईलैंड।

बिम्सटेक न केवल दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया को जोड़ता है, बल्कि महान हिमालय और बंगाल की खाड़ी की पारिस्थितिकी को भी जोड़ता है।

इसका मुख्य उद्देश्य तीव्र आर्थिक विकास के लिए एक सक्षम वातावरण बनाना है, सामाजिक प्रगति में तेजी लाना, और क्षेत्र में सामान्य हित के मामलों पर सहयोग को बढ़ावा देना।

बिम्सटेक की उत्पत्ति क्या है?

यह उप क्षेत्रीय संगठन 1997 में बैंकॉक घोषणा के माध्यम से अस्तित्व में आया। प्रारंभ में इसका गठन चार सदस्य राज्यों के साथ बी आईएसटी–ईसी (बांग्लादेश, भारत, श्रीलंका और थाईलैंड आर्थिक सहयोग) के संक्षिप्त नाम के साथ किया गया था। 1997 में म्यामार के शामिल होने के बाद इसका नाम बदलकर बिम्सट–ईसी कर दिया गया।

2004 में नेपाल और भूटान के शामिल होने के साथ, समूह का नाम बदलकर बहु–क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक) कर दिया गया (सेन राहुल 2019)।

बिम्सटेक के मुख्य उद्देश्य क्या हैं?

- उप–क्षेत्र के तीव्र आर्थिक विकास के लिए एक सक्षम वातावरण बनाना।
- समानता और साझेदारी की भावना को प्रोत्साहित करना।
- 1997 में म्यांमार के शामिल होने के बाद इसका नाम बदलकर बिम्सट–ईसी कर दिया गया।
- 2004 में नेपाल और भूटान के शामिल होने के साथ, समूह का नाम बदलकर बहु–क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक) कर दिया गया।

बिम्सटेक के सिद्धांत क्या हैं?

- संप्रभु समानता।
- क्षेत्रीय अखंडता।
- राजनीतिक स्वतंत्रता।
- आंतरिक मामलों में कोई हस्तक्षेप नहीं।
- शांतिपूर्ण सह अस्तित्व।
- साँझा लाभ।
- सदस्य राज्यों को शामिल करने वाले द्विपक्षीय, क्षेत्रीय या बहुपक्षीय सहयोग के लिए एक का गठन करें और उसका विकल्प न बनें।

बिम्सटेक की क्षमता क्या है?

- दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच पुल और इन देशों के बीच संबंधों के सुदृढीकरण का प्रतिनिधित्व करता है।
- बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में इंडो–पैसिफिक विचार का केंद्र बनने की क्षमता है, एक ऐसा स्थान जहां पूर्व और दक्षिण एशिया की प्रमुख शक्तियों के रणनीतिक हित प्रतिच्छेद करते हैं।
- सार्क और आसियान सदस्यों के बीच अंतर क्षेत्रीय सहयोग के लिए मंच।
- लगभग 15 बिलियन लोगों का घर, जो वैश्विक आबादी का लगभग 22 प्रतिशत है और 3 8 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का संयुक्त सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) है, बिम्सटेक आर्थिक विकास के एक प्रभावशाली इंजन के रूप में उभरा है।
- दुनिया का एक चौथाई व्यापारिक माल हर साल खाड़ी पार करता है।
- महत्वपूर्ण कनेक्टिविटी परियोजनाएँ।
- कलादान मल्टीमॉडल प्रोजेक्ट भारत और म्यांमार को जोड़ता है।
- एशियाई त्रिपक्षीय राजमार्ग म्यांमार के माध्यम से भारत और थाईलैंड को जोड़ता है।
- बाग्लादेश भूटान भारत–नेपाल (बीबीआईएन) मोटर वाहन समझौता यात्री और कार्गो यातायात के निर्बाध प्रवाह के लिए।

भारत के लिए बिम्सटेक का महत्व

दरअसल पाकिस्तान की भूमिका के कारण भारत मार्क के बदले बिनाको प्रमुखता दे रहा है। सार्क की प्रगति में जहाँ पाकिस्तान बाधक बना हुआ है, वहीं पाकिस्तान बिमाटेक का सदस्य नहीं है। अतः इसकी प्रगति में बाधाएँ अपेक्षाकृत कम होगी।

इसके अलावा भारत की बिम्सटेक में सक्रिय भागीदारी से भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। बिम्सटेक सदस्यों से बहुस्तरीय संबंध स्थापित कर भारत अपने पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास को गति प्रदान कर सकता है। बिम्सटेक भारत पगार के बीच यान मल्टीमॉडल पारगमन परिवहन परियोजना और भारत–भार– थाईलैंड (IMT) राजमार्ग परियोजना के विकास में भी सहयोग की उम्मीद की जा सकती है। यह संगठन दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्वी देशों के बीच सेतु की तरह काम करता है। उल्लेखनीय है कि इस समूह में दो देश दक्षिणपूर्वी एशिया के भी है। म्यांमार और भाई भारत को दक्षिण पूर्वी इलाकों से जोड़ने के लिये बेहद अहम है। इससे भारत के व्यापार को मिलेगा। इसके अलावा नेपाल और भूटान स्थल आबद्ध देशी के लिये विमाटेक के माध्यम से क्षेत्रीय संपर्क बढ़ाने के पर्याप्त अवसर हैं। सीमापार आतंकवाद और उपवाद से मुकाबला करने के लिये भारत को ऐसे क्षेत्रीय संगठन की आवश्यकता है जिसके सदस्य देश आतंकवाद के मुद्दे पर वैचारिक रूप से एकमत हैं।

बिम्सटेक माध्यम से भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ संपर्क बढ़ाकर अपने व्यापार को बढ़ावा दिया जा सकता है। बम्सटेक के माध्यम से भारत आशियान देशों के साथ संपर्क बढ़ा सकता है। बिम्सटेक संबंधित संपूर्ण क्षेत्र में मुक्त व्याचार समझौता, गरीबी उन्मूलन पर्यटन, ऊर्जा और जलवायु परिवर्तन और यहाँ तक कि आतंकवाद और आपदा प्रबंधन सहित क्षेत्रीय सहयोग मजबूत बनाने के लिये अनिवार्य है। (सरकारी रिपोर्ट)

भविष्य की संभावनाएँ

निस्संदेह, बिम्सटेक बंगाल की खाड़ी के किनारे दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच एक अद्वितीय लिंक प्रदान करता है। यह अनुमान लगाया गया था कि अंतर–क्षेत्रीय समूह पांच सार्क देशों और दो आसियान देशों के बीच एक पुल के रूप में काम करेगा। इस तरह की ब्रिजिंग से सदस्य देशों के बीच व्यापार बढ़ाने में अधिक लाभ मिलेगा।

इन वर्षों में, सहयोग के क्षेत्र मूल छह से बढ़कर 14 हो गए हैं और ये व्यापार और निवेश, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, परिवहन और संचार, पर्यटन, मत्स्य पालन, कृषि, सांस्कृतिक सहयोग, पर्यावरण और आपदा प्रबंधन, 'सार्वजनिक' से संबंधित हैं। स्वास्थ्य, लोगों से लोगों के बीच संपर्क, गरीबी उन्मूलन, जलवायु परिवर्तन और आतंकवाद और अंतरराष्ट्रीय अपराधों का मुकाबला। आने वाले समय में, सदस्य राज्यों के बीच सहयोग के सभी क्षेत्रों में सड़क और रेल परिवहन लिंक के माध्यम से अधिक कनेक्टिविटी भी एक प्रमुख फोकस के रूप में दिखाई देगी।(मेडूरी संजय पुलीपाका 2017)। महत्वपूर्ण बात यह है कि जुलाई 2004 में बैंकॉक में आयोजित अपने पहले शिखर सम्मेलन में बिम्सटेक शिखर सम्मेलन को प्रधानमंत्रियों और राष्ट्रपतियों के स्तर तक बढ़ा दिया गया था। अब तक, पांच बिम्सटेक शिखर सम्मेलन आयोजित किए गए हैं – दूसरा नवंबर 2008 में नई दिल्ली में और तीसरा कुछ अंतराल के बाद लगभग छह साल, 2014 में म्यांमार के नेतृत्व संभालने के साथ, 2018 में नेपाल में चौथे और 2022 में श्रीलंका में आखिरी बार।

हाल तक, भारत बिम्सटेक का अध्यक्ष था, जिसमें एक कार्य समूह (बीडब्ल्यूजी) भी है जिसमें बिम्सटेक सदस्य देशों के बैंकॉक स्थित राजदूत और थाई विदेश मंत्रालय के अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंध महानिदेशक शामिल हैं। बीडब्ल्यूजी निगरानी के लिए नियमित मासिक बैठकें आयोजित करता है। सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों के तहत प्रगति की समीक्षा करें, जिससे इसमें शामिल जटिलताओं को समझने में काफी मदद मिली है

इसकी संरचना को देखते हुए, इस बात पर प्रमुख बहस चल रही है कि क्या बिम्सटेक समूह को एक जीवंत क्षेत्रीय इकाई में तब्दील किया जा सकता है। जाहिर है, सदस्य देशों को सुरक्षा, ऊर्जा, व्यापार, वाणिज्य, रेल कनेक्टिविटी जैसे प्रमुख क्षेत्रों में अधिक सहयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता होगी। –सड़क संपर्क और लोगों से लोगों का संपर्क। सहयोग का ध्यान बुनियादी ढांचे के निर्माण और अन्य ठोस परियोजनाओं की पहचान के क्षेत्र में भी होना चाहिए। व्यापार और आर्थिक सहयोग स्पष्ट रूप से निकट भविष्य में महत्वपूर्ण होने के साथ, सदस्य राष्ट्र बिम्सटेक मुक्त व्यापार समझौते के शीघ्र समापन की परिकल्पना कर रहे हैं। आमतौर पर यह माना जाता है कि बिम्सटेक एक प्रकार की अभिव्यक्ति और इच्छा है जो भारत ने 1990 के दशक की अपनी पूर्व की ओर देखो नीति

को बढ़ावा देने के लिए दिखाई थी, जो थाईलैंड की पश्चिम की ओर देखो नीति के साथ भी समानता रखती है। अंततः, इस तरह की झलक एशिया के सबसे आशाजनक पुल के निर्माण में मदद करेगी और गतिशील वातावरण, जो अंततः क्षेत्र में शांति और समृद्धि लाएगा।

विशेष रूप से, पिछले कुछ वर्षों में, बिम्सटेक के प्रत्येक सदस्य देश के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंधों में काफी सुधार हुआ है। नई दिल्ली क्षेत्रीय संदर्भ में उनमें से प्रत्येक के साथ एक मजबूत जुड़ाव विकसित करने में सक्षम रही है। भारत भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग, कलादान मल्टीमॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट, एशियाई राजमार्ग नेटवर्क, कनेक्टिविटी के लिए आसियान मास्टर प्लान और अन्य जैसी विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से भौतिक कनेक्टिविटी में सुधार के लिए बिम्सटेक सदस्यों के साथ भी काम कर रहा है। इसके अलावा, म्यांमार के लिए सीधी शिपिंग लाइन शुरू करने की भी योजना प्रतीत होती है

हाल के शिखर सम्मेलन में विचार–विमर्श के दौरान, ऊर्जा मुद्दे प्रमुखता से सामने आए, सदस्य राज्य ट्रांसमिशन राजमार्गों के माध्यम से एक–दूसरे से जुड़ने पर सहमत हुए गैस और तेल पाइपलाइन। इसके अलावा, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में सहयोग के अवसर ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने के लिए भी संभावनाएं तलाशी जाएंगी। (सिंह नरपत, 2016)

जून 1997 में इसकी शुरुआत के लगभग 20 साल हो गए हैं, फिर भी बिम्सटेक वास्तव में आगे नहीं बढ़ पाया है। पहले इसे BIST-EC कहा गया, इसने बांग्लादेश, भारत, श्रीलंका और थाईलैंड को एक साथ लाया। नेपाल और भूटान बाद में 2004 में शामिल हुए, और म्यांमार ने 1997 में पर्यवेक्षक के रूप में पहली बैठक में भाग लिया और उस वर्ष के अंत में एक विशेष मंत्रीस्तरीय बैठक में पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल हुआ। जुलाई 2004 में पहले शिखर सम्मेलन के दौरान समूह के नेता बिम्सटेक नाम पर सहमत हुए।''

बिम्सटेक में भारत की भूमिका बेहद अहम रहने वाली है. वास्तव में, सहयोग के कई क्षेत्रों में, नई दिल्ली को सक्रिय रहना होगा और देखना होगा कि हर क्षेत्र में किस तरह से गहनता लाई जा सकती है। इसने संसाधन प्रबंधन और आर्थिक विकास जैसे क्षेत्रों में अंतरिक्ष विज्ञान के अनुप्रयोग में अपने बिम्सटेक भागीदारों के साथ काम करने की इच्छा दिखाई है।

इसके अलावा, सदस्य देशों को क्षेत्र में संचार के समुद्री मार्गों की सुरक्षा प्रदान करने के लिए भी मिलकर काम करने की जरूरत है, क्योंकि आतंकवाद और अंतरराष्ट्रीय अपराधों से उत्पन्न खतरे की धारणा सभी सात सदस्यों के लिए आम है। उन्हें एहसास है कि बिम्सटेक क्षेत्र में आतंकवाद के बढ़ते खतरे का मुकाबला करने के लिए मजबूत सहयोग की अधिक आवश्यकता है (भट्टाचार्य डी ,2019)।

सहयोग के प्रमुख क्षेत्र

बंगाल की खाड़ी में कई क्षेत्र फलदायी क्षेत्रीय सहयोग के अवसर प्रस्तुत करते हैं। कुछ क्षेत्र जिनमें सहयोग के अपार अवसर हैं, उनकी रूपरेखा इस प्रकार हैः

पर्यटन

पर्यटन अंतर–क्षेत्रीय पर्यटन के साथ–साथ तीसरे देश के पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सहयोग की समृद्ध क्षमता प्रदान करता है। थाईलैंड, श्रीलंका और नेपाल जैसे कुछ देशों में पर्यटन राष्ट्रीय आर्थिक गतिविधि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है लेकिन अन्य देशों में भी इसका महत्व बढ़ रहा है। यह क्षेत्र पर्यटन सर्किट के संयुक्त प्रचार के लिए एक प्रमुख अवसर प्रस्तुत करता है। अधिकांश देशों के बीच सांस्कृतिक संबंध हैं और वे बौद्ध स्मारकों को साझा करते हैं। बिम्सटेक सदस्यों के बीच श्रीलंका, भारत, थाईलैंड, म्यांमार और नेपाल और भूटान के सभी महत्वपूर्ण बौद्ध स्थलों को मिलाकर संयुक्त पैकेज एशियाई बौद्ध विरासत पैकेज अत्यधिक आकर्षक हो सकता है। ये पैकेज हवाई संपर्क, क्रूज़ लाइनर और ओवरलैंड कनेक्शन को जोड़ सकते हैं जो पर्यटकों को किसी एक देश की तुलना में कहीं अधिक विविधता प्रदान करते हैं।

खाद्य प्रसंस्करण

थाईलैंड दुनिया में प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों का प्रमुख निर्यातक बनकर उभरा है। खाद्य उत्पादों के प्रसंस्करण, पैकेजिंग, विपणन और निर्यात और विकसित देशों में लागू कड़े खाद्य सुरक्षा नियमों के अनुपालन में थाईलैंड द्वारा विकसित तकनीक और विशेषज्ञता अन्य बिम्सटेक देशों के लिए बहुत मूल्यवान हो सकती है। क्षेत्र के उद्योग निकाय पहले ही कुछ संपर्क स्थापित कर चुके हैं। क्षेत्र की क्षमताओं को अन्य देशों तक फैलाने के लिए इसे मजबूत करने की आवश्यकता है।

मत्स्य पालन

अधिकांश देशों में मत्स्य पालन खाद्य सुरक्षा और निर्यात आय का प्रमुख स्रोत है। यहाँ गहरे समुद्र में क्षेत्र के कुछ देशों द्वारा विकसित की गई विशेषज्ञता है मछली पकड़ने और विकसित देशों पर लागू होने वाले कड़े एसपीएस नियमों को संभालने में आपसी लाभ के लिए साझा किया जाए।

ऑटोमोबाइल और पार्ट्स

इसके बाद थाईलैंड एशिया में ऑटोमोबाइल और पार्ट्स के उत्पादन का एक प्रमुख केंद्र बनकर उभरा है। जापान और कोरिया. भारत भी वाहनों की एक बड़ी श्रृंखला का उत्पादन करता है और इसे एक उभरते हुए देश के रूप में देखा जाता है। श्रम का विभाजन या किसी प्रकार की विशेषज्ञता दोनों देशों और क्षेत्र के अन्य देशों को अपने–अपने संबंध बनाए रखने में मदद मिलेगी। क्षेत्र के ऑटो उद्योग उद्यमों को अपने तालमेल का फायदा उठाने के लिए अपने उद्योग संघ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

प्रौद्योगिकी प्रबंधन और क्षमता निर्माण

क्षेत्र में प्रौद्योगिकी प्रबंधन और क्षमता निर्माण के क्षेत्र में सहयोग की प्रचुर संभावनाएं हैं। जैव प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष अनुसंधान आदि जैसे सीमांत विज्ञानों में, बुनियादी अनुसंधान पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए, लेकिन अन्य क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी का अनुप्रयुक्त अनुसंधान और प्रबंधन प्राथमिक विचार हो सकता है। प्रौद्योगिकी के प्रबंधन में आईपीआर के प्रबंधन और प्रौद्योगिकी पूर्वानुमान, प्रौद्योगिकी मध्यस्थता आदि पर ध्यान देने के साथ प्रौद्योगिकी प्रबंधन जैसे मुद्दे शामिल हो सकते हैं। एस एंड टी में सहयोग को सभी आयामों पर ध्यान केंद्रित करना होगा, और इन पहलुओं के कार्यान्वयन से सफलता की सीमा निर्धारित हो सकती है।

सूचना प्रौद्योगिकी में सहयोग

डिजिटल विभाजन से निपटना यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां अंतर–बिम्सटेक सहयोग की अपार संभावनाएं हैं, क्योंकि इसके दो सदस्यों ने पूरक दिशाओं में जबरदस्त तुलनात्मक लाभ प्राप्त किया है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि जहां भारत सॉफ्टवेयर विकास के क्षेत्र में अपनी क्षमता के लिए प्रशंसित है, वहीं थाईलैंड ने हार्डवेयर असेंबलिंग में विशेषज्ञता हासिल की है। बिम्सटेक आईसीटी सहयोग पर एक कार्यक्रम शुरू करने की गुंजाइश और आवश्यकता दोनों है जिसमें आईटी प्रशिक्षण और सॉफ्टवेयर विकास, आईटी–सक्षम सेवाएं, हार्डवेयर प्रौद्योगिकियों का हस्तांतरण, कंप्यूटर विनिर्माण के लिए संयुक्त उद्यम, स्थानीय उपयोग के लिए संचार प्रौद्योगिकियों का अनुकूलन आदि पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। इसमें ई–गवर्नेंस, ई–कॉमर्स को बढ़ावा देने और ज्ञान समाज की स्थापना के लिए सामूहिक प्रयास भी शामिल हो सकते हैं

विकास के अनुभवों का आदान–प्रदान और थिंक टैंक का नेटवर्क

क्षेत्र के विभिन्न देश न केवल ताकत के पूरक हैं, बल्कि इसमें काफी संभावनाएं भी हैं। उदाहरण के लिए, माइक्रो–क्रेडिट और जनसंख्या प्रबंधन में बांग्लादेश के प्रयोग, वैश्वीकरण के प्रबंधन और सार्वभौमिक कवरेज स्वास्थ्य बीमा में थाईलैंड के अनुभव, मानव विकास में श्रीलंका के अनुभव, बैंकिंग और पूंजी बाजार के विवेकपूर्ण प्रबंधन और ग्रामीण दूरसंचार में भारत के अनुभव इत्यादि। पारस्परिक लाभ के लिए इसका आदान–प्रदान किया जा सकता है। विकास के अनुभवों के आदान–प्रदान को सुविधाजनक बनाने के लिए, क्षेत्र के नीति थिंक–टैंकों का एक बिम्सटेक नेटवर्क बनाया जा सकता है। इस नेटवर्क को आर्थिक मंच और बिजनेस फोरम की बैठकों की तरह नियमित रूप

से मिलना चाहिए ताकि विभिन्न सदस्य देशों के विकास के अनुभवों और आर्थिक सहयोग की संभावनाओं पर चर्चा की जा सके और उनसे नीतिगत सबक लिया जा सके और अनुवर्ती कार्रवाई के लिए मंत्रिस्तरीय बैठकों में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जा सके।

दक्षिण एशियाई देशों के सार्क शिखर सम्मेलन से हटने के बाद, बिम्सटेक शिखर सम्मेलन में दूसरी बार पाकिस्तान को अपने आतंकवादी मंसूबों के लिए दक्षिण एशिया के नेताओं से कड़ी निंदा का सामना करना पड़ा। इस तरह की निंदा न केवल भारत के लिए एक कूटनीतिक जीत है, बल्कि पूरे क्षेत्र को आतंकवाद के गंभीर खतरे को देखते हुए सभी बिम्सटेक देशों के लिए एक प्रासंगिक रुख भी है।

बिम्सटेक नेताओं ने ठोस कार्रवाई के साथ आगे बढ़ने के लिए सहयोग के विभिन्न अन्य क्षेत्रों की भी पहचान की – पारगमन, ट्रांस–शिपमेंट और वाहन यातायात की आवाजाही पर एक बिम्सटेक रूपरेखा समझौता; आपदा प्रबंधन पर वार्षिक अभ्यास करना; प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के लिए बिम्सटेक केंद्र की स्थापना, बिम्सटेक तटीय शिपिंग समझौते पर बातचीत शुरू करना; सूचना खुफिया जानकारी साझा करना और राष्ट्रीय सुरक्षा प्रमुखों की वार्षिक बैठक; और इसी तरह सहयोग के नए रास्ते तलाशने और उनकी पहचान करने के लिए एक बिम्सटेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों का समूह बनाने का भी निर्णय लिया गया। 1997 में सहयोग के छह क्षेत्रों में से, बिम्सटेक सहयोग आज 14 क्षेत्रों तक फैला हुआ है, जिसमें कृषि, गरीबी उन्मूलन, जलवायु परिवर्तन, सांस्कृतिक सहयोग, आतंकवाद विरोधी और अंतरराष्ट्रीय अपराध शामिल हैं।

बिम्सटेक की प्रगति के समक्ष आने वाली प्रमुख चुनौतियाँ

1. भारत बिम्सटेक का सबसे बड़ा सदस्य है लेकिन मजबूत नेतृत्व प्रदान नहीं कर पाने के कारण भारत की सदैव आलोचना होती रही है।
2. सबसे पहले तो यह संगठन तब तक प्रगति नहीं करेगा जब तक कि बिम्सटेक सचिवालय को महत्वपूर्ण रूप से अधिकार नहीं दिया जाता है। उल्लेखनीय है कि लंबे समय से बिम्सटेक के लिये स्थायी सचिवालय की स्थापना की मांग की जाती रही है।
3. यह क्षेत्र विभिन्न बहुपक्षीय संगठनों का नेतृत्व करते है इनमें थाईलैंड और म्यांमार भी बिमाटेक के बजाय आसमान को अधिक महत्त्व देते हैं।
4. इसके अलवा बिम्स्टेक के सदस्य राष्ट्रों में आपसी समन्वय की कमी है जिसके चलते नियमित एवं प्रभावशाली वार्ताओं का आयोजन नहीं होता।
5. बिम्सटेक के अंतर्गत क्षेत्रीय संपर्क का कार्य काफी धीमी गति से हो रहा है. जबकि BCIM (बांग्लादेश भारत–म्यांमार–चीन) इकोनॉमिक कॉरीडोर की स्थापना के लिये चीन काफी सक्रिय है।
6. गौरतलब है कि BCIM (बांग्लादेश–भारत–म्यांमार–चीन) इकोनॉमिक कॉरिडोर चीन की एक महत्त्वाकांक्षी परियोजना है जो भारत बांग्लादेश, चीन एवं म्यामार के बीच रेल एवं सड़क संपर्क स्थापित करेगी। इसके अलावा इसके द्वारा भारत के कोलकाता चीन के कुनमिंग, म्यांमार के मांडले और बांग्लादेश के ढाका और चटगाँव को आपस में जोड़ा जाएगा।
7. बिम्सटेक क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधियों के विकास के लिये एक मुक्त व्यापार समझौते (FTA) पर सदस्य देशों के बीच सहमति अभी नहीं बन पाई है।
8. संगठन के कुछ सदस्य देशों के बीच शरणार्थियों की समस्या क्षेत्र में राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक असंतुलन पैदा कर रही है। (दत्ता.पी 2017)

क्या किये जाने की आवश्यकता है?

बिम्सटेक के सभी सदस्य देशों की सक्रिय भागीदारी एवं परस्पर समन्वय के माध्यम से इस क्षेत्रीय संगठन को आर्थिक विकास का केंद्र बनाने के लिये भारत को अपने कदम आगे बढ़ाने होंगे। इसके अलवा संगठन के बेहतर

कार्यान्वयन के लिये कम प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर भी ध्यान केंद्रित करना होगा। भारत को अनौपचारिक रूप से बिम्सटेक के नेतृत्वकर्ता की भूमिका निभानी होगी और इसके व्यावहारिक प्रतिबद्धताओं के लिये एक मिशाल साबित करना होगा।

इसके सदस्य देशों की तकनीकी विशेषज्ञों की सहायता लेकर बहुपक्षीय एजेंडा निर्धारित करने और शिखर सम्मेलन तथा मंत्रिस्तरीय बैठकों के बीच चालक दल के रूप में कार्य करने के लिये सचिवालय को स्वायत्तता प्रदान करना होगा। साथ ही सदस्य देशों द्वारा इस संगठन के लिये वित्तीय और मानव संसाधन की सुनिश्चितता को बनाए रखना भी आवश्यक है। सदस्य देशों द्वारा समय पर सभी प्रतिबद्धताओं को पूरा करना ही अक्सर बहुपक्षीय संगठन की आधी सफलता का निर्धारण करता है। (बनिक दी और जाना बीबी 2019)।

निष्कर्ष

बिम्सटेक (बहु–क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल पर निष्कर्ष यह है कि यह दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्व एशिया में एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय संगठन बना हुआ है, जिसमें सात सदस्य देश (बांग्लादेश, भूटान, भारत, म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका, और थाईलैंड) शामिल हैं। बिम्सटेक का लक्ष्य व्यापार, निवेश, ऊर्जा, प्रौद्योगिकी और आतंकवाद विरोधी सहित विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देना है। इसकी सफलता आम चुनौतियों से निपटने और साझा लक्ष्यों को हासिल करने के लिए मिलकर काम करने की सदस्य देशों की प्रतिबद्धता पर निर्भर करती है। हालाँकि इसने कुछ क्षेत्रों में प्रगति की है, फिर भी इसके विकास और इसकी पहलों को मजबूत करने की गुंजाइश बाकी है। बिम्सटेक की प्रभावशीलता क्षेत्र में राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा गतिशीलता से आकार लेती रहेगी।

संदर्भ सूची

1. एस. गुर्जर, 'क्या सार्क बर्बाद हो गया है?', द डिप्लोमैट, www.thediplomat.com, 1 अगस्त (2017) को एक्सेस किया गया।
2. भास्कर एस जी (2017) 'बिम्सटेकः भविष्य का मानचित्रण'' रक्षा अध्ययन और विश्लेषण संस्थान।
3. दत्ता पी (2017) बिम्सटेक चुनौतियां और अवसर, *सामरिक विश्लेषण* 41 (1), 71– 81।
4. भट्टाचार्य दी (2019) बिम्सटेकः दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय सहयोग की संभावनाएं और चुनौतियां, एशियाई सर्वेक्षण 59(2) 235–256।
5. बिम्सटेक.ओआरजी (2022), चार्टर।

––==00==––